P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-II* October-2015

डॉ0 अम्बेडकर–समाज सुधारक

राजेश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास, संस्कृत एवं पुरातत्व विभाग,
डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,
फैजाबाद

सारांश

कितना पुराना यह देश है। कोई भी कालखण्ड तय नहीं कर सकता है। यहाँ का समाज दर्शन, जीवन भी उतना ही प्राचीन है। हजारों लाखों वर्षों तक विश्व गुरू रहा। ज्ञान की इच्छा रखने वाले ज्ञान प्राप्त करने आये। धन की इच्छा वाले व्यापार करने आये। वही लूटने वाले लूटेरे भी आयें। अपने ही दोषों के कारण वैभवशाली राष्ट्र धीरे–धीरे अवनति की ओर बढ़ता चला गया। अपने ही देश के बन्धु अपने धर्म बन्धुओं को स्पर्श करने और देखने में डरने लगें हिन्दु–हिन्दु के ही स्पर्श मात्र से ही अपवित्र होन लगा करोड़ो बन्धु इसी धर्म में स्वधर्म बन्धुओं द्वारा तिरस्कृत और अपमानित किये गये। क्योंकि उनका जन्म छोटी कहे जाने वाली जाति में हुआ था। लाखों करोड़ों मनुष्य अपमानित जन्म लेते थे और अपमानित होकर मर जाते थे। हे ईश्वर, इस देवभूमि पर ऐसा क्यों हो रहा था। यह किसने प्रारम्भ किया। क्यों प्रारम्भ किया। इनका क्या उद्देश्य था। वह देश जहाँ चीटी साप तक को भोजन कराने की परम्परा थी। वहाँ मनुष्य, मनुष्य को देखना भी नही चाहता था। लोग अपमानित, तिरस्कृत, बहिस्कृत होकर कष्ट पाते रहे और मरते रहे। लेकिन सत्य की अधिष्ठाती इस मातृ–भूमि ने हार नही मानी। नियति के इस षडयन्त्र से टक्कर लेने वाले महापुरूष खड़े होते रहे। इन्ही महापुरूषों में से एक थे महान समाज सुधारक डॉ0 बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर।

मुख्य शब्द : समाज सुधारक, बन्धुओं, तिरस्कृत, बहिस्कृत, राजनैतिक।

प्रस्तावना

डॉ0 अम्बेडकर ने सम्पूर्ण जीवन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराई से संघर्ष किया। कभी सम्पादक के रूप में तो कभी किसी संस्था के रूप में, कभी व्यक्तिगत रूप में तो कभी किसी संस्था के रूप में, कभी व्यक्तिगत रूप से उन्होंने सामाजिक बुराई को जड़ से उखाड़ने का प्रयास किया।

डॉ0 अम्बेडकर जी का यह सुनिश्चित विचार था कि समाज में पहले परिवर्तन का सबल आधार तैयार करना चाहिए। समाज का विवक सहृदयता, आपसी मेल–जोल, सम्पूर्ण समाज की उन्नति का संकल्प यदि नही रहा तो राजनीति केवल कुछ स्वार्थी लोगों का जमावाड़ा हो जायेगी। समाज को संस्कारों से दूर किए बिना राजनैतिक सुधार असम्भव है। वे कहते थे कि समाज की प्रगति में राजनोतिक से अधिक महत्व सामाजिक व आर्थिक पहलुओं का है। अतः इस ओर सामाजिक कार्यकर्ताओं को ज्यादा ध्यान देने की आवश्कता है। राजनीति ही सब कुछ है ऐसी भावना के वशीभूत लोग सिर्फ चुनाव के ही समय समाज में दिखाई देते है पहले टिकट के लिए दौड़ते है यदि टिकट नहीं मिला तो समाज में फूट डालते है, चुनाव में यदि हार गये तो थक हार कर निराश होकर से जाते है और यदि जीत गये तो विधान मण्डलों में पाँच साल तक शान से मौन धारण कर बैठना, यही कार्य है। डॉ0 अम्बेडकर जुलाई 1953 में औरंगाबाद में दलित कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए निवेदन किया था कि चुनावी राजनीति में शरीक होने वाला कार्यकर्ता चुनाव समाप्त होने के बाद निष्क्रिय क्यों बन जाता है। राजनोति के अलावा सामाजिक जीवन की किसी के और क्षेत्र भी कार्य–कर्ताओ की प्रतिक्षा कर रहे है लेकिन वहाँ जाने की किसी की इच्छा क्यों नहीं होती। प्रत्येक चाहता है कि वह एम.एल.ए. अथवा एम.पी. बने। यदि वे बन भी गये तो असेम्बली या पार्लियामेन्ट में जाकर जनता या समाज की समस्या का समाधान करने की फुर्सत नही मिलती। असेम्बली में मतदाताओं का सुझाव एवं शिकायत रखी जानी चाहिए। राजनीति के भी क्षेत्र में होमवर्क अत्यन्त आवश्यक होती है। केवल घीसे–पीटे ऊबाऊ भाषण करना और फूल–माला पहनकर घर लौटना इतना ही पर्याप्त नही है।

बाबा साहब का मत था कि देश के राजनीति में रहने वाले लोग चरित्रवान हो फरवरी 1954 को आचार्य आत्रे द्वारा निर्मित फिल्म के उद्घाटन क दौरान उन्होंने कहा था ''आज देश में चरित्र ही नही बचा। जिस देश में नैतिकता नही होती उसका भविष्य कठिन होता है। फिर देश के प्रधानमंत्री कोई

हो या मुख्यमंत्री कोई भी क्यों न हो देश का भविष्य अंधकार ही में रहेगा मंत्री देश का उद्धार नही करते वरन् जिसने धर्म को भली भांति समझा है वही देश को तार सकता है। महात्मा फूले ऐसे ही धर्म सुधारक थे। विधा, प्रज्ञा, करूणाशील और मैत्री भाव इन धर्मतत्वों से प्रत्येक को अपना चरित्र बनाना चाहिए। करूणा का मूल अर्थ है– मानव के बीच आपसी प्रेम। प्रत्येक मानव को इसके लिए आगे बढ़ना चाहिए।

नवम्बर 1947 को दिल्ली में बाबा साहब ने कहा था ''हम सब भारतीय परस्पर सगे भाई जैसे है ऐसी भावना आपेक्षित है। इसे ही बन्धुभाव कहा जाता है। और आज इसी का अभाव है। जातियाँ आपसी द्वेष और ईष्या बढ़ाती है। अतः यदि राष्ट्र को उच्चासन तक हमें पहुँचना है तो इस अवरोध को दूर करना होगा। क्योंकि जहाँ राष्ट्र का अस्तित्व होगा वहीं बन्धुभाव पनपेगा। बन्धुभाव ही नही रहेगा तो समता, स्वाधीनता सब अस्तित्व हीन हो जायेगा। वे कहते है कि मेरा तत्व ज्ञान राजनीति से नही धर्म से उपजा है। भगवान बुद्ध के उपदेशों से मैने वह ग्रहण किया है। उसमें स्वाधीनता और समता को स्थान है। कानून ही समता और समता की गारण्टी है ऐसा म नही मानता। समता के उचित परिपालन में केवल बन्धुभाव ही सुरक्षा की गारण्टी हो सकता है। इसी बन्धुता का दूसरा नाम मानवता है और मानवता ही धर्म है।

1928 में शासकीय विधि महाविद्यालय में प्राध्यापक नियुकत होने के बाद एक स्थान पर वे कहते है।

भारतीयता के विरोधक, गौ मांस भक्षक, रामकृष्ण एवं शिव मूर्तियों क भंजक, मोहम्मद, मार्टिन, मुसलमानों एवं ईसाईयों को जब छुआ जा सकता है तो हिन्दू समाज का ही अंग समझा जाने वाला माधव जो गौ, गंगा, गीता, राम, कृष्ण, शिव की उपासना करता है वह अछूत क्यों?

दुनिया के लिए दुर्लभ तत्वज्ञान भी हिन्दू ग्रन्थों में भरा पड़ा है। लेकिन अब आवश्यकता इस बात की है कि उनका पुनः शोधन करे। वे कहते है ''यदि आप हिन्दू धर्म को बचाना चाहते है तो हिन्दूओं को चाहिए कि सामाजिक विरासत में जो उपयोगी है उसे सभांलकर रखे और अगली पीढ़ियों को दे और शेष नष्ट कर दो।

अप्रैल 1929 में रत्नागिरी जिले में दलितजाति परिषद के अधिवेशन डॉ0 साहब की अध्यक्षता में चिपलूग नामक स्थान में सम्पन्न हुआ जिसमे डॉ0 अम्बेडकर ने अपने ब्राह्मण सहयोगी श्री देवराव नाईक को भी बुलाया। श्री नाइक ने वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ हजारों अछूतो को यज्ञोपवीत करवाया। डा0 साहब का यह स्पष्ट मत था कि प्रत्येक हिन्दू का वैदिक रोति–रिवाज में यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार हें इसी कार्य हेतु डा0 साहब ने बम्बई में ''समाज समता संघ'' को स्थापना की जिसका मुख्य कार्य अछूत नागरिकों को अपने अधिकारों के लिए सजग करना था। इसी संघ के तत्वाधान में कई स्थानों पर खुद उपस्थित होकर उन्होंने दलित समाज के नागरिकों का उपनयन संस्कार कराया।

महाड़ के एक जाटव मोहल्ले में भाषण देते हुए उन्होंने महिलाओं से कहा था ''आप अपने को कभी अछूत मत समझो। साफ–सुथरा जीवन व्यतीत करो। स्पृश्यता स्त्रियो की भांति वस्त्र पहनो। इसकी चिन्ता न करो कि तुम्हारे वस्त्र फटे है पुराने है। यह ध्यान रखो कि वे साफ हो। आपक वस्त्रों की स्वतन्त्रता पर कोई प्रतिबन्ध नही लगा सकता। अपने मन को स्वच्छ बनाने का ध्यान रखो। आत्मा सहायता की भावना अपने मन में पैदा करो। वे स्वयं कहते थे कि मुझे बीड़ी, सिगरेट, शराब किसी से प्रेम नही है। हम भी अपनी–अपनी बस्तियों के अन्दर इन वस्तुओं को रोके। तुम्हारे पति या पुत्र जब शराब पीकर आये तो उन्हे खाना न दो। जब जक शराब पियोगे अपनी बस्ती का विचार और उसके विकास की बाते मन में नही आयेगी।

निष्कर्ष

वे कहते थे कि हमको अपना सुधार अपने आप ही करना है। जो दोष उच्च जाति का है उसके लिए संघर्ष करो। देर–सवेर हम लोगो को अपने अधिकार वापस मिल जायेगा। लेकिन यदि हम लोगों ने अपनी बस्तियों के अन्दर सुधार नहीं कि ये तो हमारी स्थिति क्या होगी। हमारे समाज के लोगों को स्वयं अपने दोषों का बारीकी से निरीक्षण करना चाहिए। अपने बच्चों को स्कूल क्यों नहीं भेजते हैं स्त्री शिक्षा उतना ही अनिवार्य है जितना पुरूष शिक्षा। यदि आप सब पढ़ होंगे तो अपनी उन्नति जल्दी होगी। जैसे तुम रहोगे वैसे ही सन्ताने बनेगी।

मालावार जो आज केरल के नाम से जाना जाता है वहां पर महिलाओं की स्थिति देखकर अम्बेडकर जी बहुत दुःखी हो उठे। महिलाओं की एक सभा में तो चार घण्टे लगातार बालते ही रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रानाडे, गाँधी और जिन्ना– डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर।
2. पाकिस्तान अथवा भारत का विभाजन– डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर।
3. राष्ट्रपुरूष– डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर– डॉ0 कृष्ण गोपाल।
4. डॉ0 अम्बेडकर – लाइफ एण्ड मिशन– धनंजय कीर।
5. डॉ0 अम्बेडकर– डॉ0 वृजलाल वर्मा।
6. वहिस्कृत भारत– डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर।
7. डॉ0 अम्बेडकर एक चिन्तन– मधुलिमये।
8. हमारे डॉ0 अम्बेडकर जी –श्री आश्चर्य लाल नरूला।
9. डॉ0 अम्बेडकर, व्यक्तित्व एवं कृतित्व– डॉ0 डी0आर0 जाटव।
10. प्रखर राष्ट्र भक्त– अम्बेडकर– एस0आर0 राधास्वामी।